Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal
ISSN : 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume -8 | Issue - 2 | March - 2016

वनों का विनाश एक पर्यावरणीय अध्ययन

कांबले डी.एस.
सहाय्यक प्राध्यापक , भूगोल विभाग ,
जवाहर कला,विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर (महाराष्ट्र).

सारांश : -

आज हम 21 वी सदी मे प्रवेश कर रहे है । जिससे विज्ञान और पर्यावरण प्रौद्योगिकी आवास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है । इस प्रगति के कारण वनों का विनाश मानव अपने अपने सुख-सुविधायें पाने के लिए कर रहा है । इसके कारण पर्यावरण में अनेक समस्या निर्माण हो रहे है । तात्कालिक लाभोंके लालच में मानव ने पर्यावरण अवनयन करणे का प्रयास किया , इससे जिव जंतू ,वनस्पती की अन्य जातिया नष्ट हो रही है । फलस्वरूप पर्यावरण परिस्थितीमे असंतुलन उत्पन्न हो रहा है ।

शब्द कुंजी - मानव एवं वन विनाश, वन ।

प्रस्तावना : -

वन विनाश पर्यावरणीय क्षति है । जीव-जंतुओ, वनस्पतियों, मानव आदि द्वारा जैवविविधता का क्षरण होता है। पर्यावरण की दृष्टी से मूल्यवान वनस्पति पर पर्यावरण की मोलिकता निर्भर है । इनसे जो क्षेत्र समृध्द होता है वहाँ मौलिक एवं उत्कृष्ट पर्यावरण सृजित होता है । इसके विपरीत जिन क्षेत्रों में इनका -हास होता है यहाँ जैव-विविधता क्षरण होता है । पर्यावरणीय तत्वोंकी मौलिकता को सुरक्षित रखना पर्यावरण के लिए आवश्यक है । इनके विनाश में मनुष्य का योगदान प्रकृति की अपेक्षा अधिक है । जनसंख्या वृध्दि एवं विकसनशील प्रवृति के कारण वन का -हास तीव्र गति से हो रहा है । वन कटाव से इसमे रहनेवाले प्राणी स्थानांतरित हो रहे है अथवा नष्ट हो रहे है । वन विनाश से अनेक वनस्पतियाँ नष्ट हो रही है । फल स्वरूप पर्यावरण पारिस्थिति की में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है ।

विषय विश्लेषन :-

वन समस्त प्राणियों के जीवन का आधार होते है । ये प्रकृति के निःशुल्क कार्यकर्ता एवं निष्पक्षकर्मी है, इनसे किसी देश की न केवल जलवायू प्रभावित होती है, अपितु देश के उद्योंगो के लिए कच्चा माल व अनेक साधन उपलब्ध होते है , इन्ही वनों मे अनेक वन्य जीव-जंन्तू , पशु-पक्षी विचरण करते है तथा परिस्थितिकीय सन्तुलन बनाए रखने मे अपना-अपना योगदान देते है ।

वन अतीत से मानव के ज्ञान-विज्ञान एवं समस्त क्रियाओ का स्त्रोत है । संस्कृति के प्राथमिक चरण में मानव पूर्णत; वन पर निर्भर था । वह अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति इसी से करता था।-

भोजन के लिए फल , वस्त्र के लिए छाल, पत्तियॉ आदि, भोज्य तथा वस्त्र के लिए वन्य जीव-जन्तुओं, रोग-निदान हेतू जंगली जडी-बूटीयों , सुरक्षा के लिए काष्ट उपकरणों आदि का प्रयोग करता था । इनको प्राप्त करने के लिए वह अन्यान्य क्रियायें करता था ।

भारतवासी एवं उनकी संस्कृति तादात्म्य रूपसे सम्बन्धित है । इस संस्कृति का उद्भव स्थल शान्त एवं सुरम्य वन का वातावरण था । प्राचीन काल में गौतम बुध्द का सम्पूर्ण जीवन-काल को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है । उनके जीवन का अधिकांश भाग वनों एवं उनके आस-पास व्यतीत होता था । वृक्षो को चिन्तनों में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया । इसे महादानी की संज्ञा दी गयी तथा यह कहा गया कि यह अपना सब कुछ मनुष्यों को समर्पित कर देता है । साथ ही साथ वन्य जीव जन्तुओं को भी महत्व दिया गया । वानस्पतिक आवरण को सृष्टी की अनुपम रचना स्वीकार किया गया ।

संस्कृति के उत्कर्षण के साथ-साथ मानव आवश्यकता बढती गयी जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढता गया । मानव आपने स्वार्थ के लिए वनों को काटता गया । वह जंगली जीवन का परित्याग कर सुस्कृत जीवन -व्यापन करने लगा । वर्तमान समय में मनुष्य के अनेक प्रयोंगों एवं प्रयोज्य वस्तुओं मे वन मे उपादानो का प्रयोग हो रहा है । परोक्ष रूप से वह वन पर आज भी निर्भर है । जनसंख्या वृध्दि से जीव- जन्तुओं एवं वन्य वस्तुओं की माग मे वृध्दि हो गयी है ।

वन विनाश के कारण : -

भारत वर्ष अतीत में प्राकृतिक वनस्पती की दृष्टी से समृध्द था । जलवायविक दशाओं, खनिज संसाधनों की विपुलता , उर्वरक भूमि, जल की सुविधा आदि के कारण इस देश की जनसंख्या निरन्तर बढती गयी । फलस्वरूप बनों पर दबाव बढता गया । वनक्षेत्र निरन्तर सिमित होता गया ।

1) ऊर्जा स्त्रोत के रूप में वन : - मानव के लिए वन अक्षय स्त्रोत अतीत से बन गया था । जब अग्नि का अविष्कार हुआ तब मानव ने लकडियों को जलाकर शीत से अपनी सुरक्षा करना प्रारम्भ कर दिया था । कालान्तर में जब भोजन को पकाकर खाने की विधि की खोज की तो लकडी इसमे अत्यंत सहयोगी हुई । बनो से जलाने के लिए लकडी मनुष्य प्राप्त करता है । लकडी का प्रयोग कोयले के रूप में किया जाता है । दो दशकपूर्व तक रेलगाडियाँ लकडी के कोयले की सहायता से चलती थी । वर्तमान समय मे छोटे छोटे उद्योंगों मे लकडी का कोयला प्रयुक्त होता है ।

2) **बाँध परियोजनाओं का निर्माण :** विकास के कारण मनुष्य द्वारा नदियों पर बडे बाँधो का निर्माण किया जा रहा है । इसके लिए वनों को साफ किया जाता है । बाँध- निर्माण क्षेत्र में जो वनस्पतियाँ बची रहती है । वे भी कृत्रिम झील में डूबकर नष्ट हो जाती है । दक्षिण भारत की अनेक नदी घाटी-परियोजनाओं के निर्माण से भारी मात्रा में वनो को नुकसान हुआ है ।

3) **कृषि क्षेत्र का विस्तार :** - बढती जनसंख्या के भरण -पोषण के लिए कृषि क्षेत्रों का विस्तार नितान्त आवश्यक था । फलस्वरूप वनों को काटकर कृषि क्षेत्र का विस्तार किया गया है । भारत वर्ष में कृषिक्षेत्र विस्तार मे वनों का विनाश आधिक किया गया। पर्वतीय क्षेत्रों में वनो को काटकर सीडीनुमा खेतों का निर्माण किया गया है ।

4) **वन्य वस्तुओं का उद्योंगों मे प्रयोग :** भारत स्वतंत्र होने के बाद में वन्य वस्तुओं पर आधारित अनेक छोटे-छोटे उद्योंगों का विकास किया गया । इन उद्योगों की संख्या निरन्तर बढती गई । कागज, दियासलाई, फर्नीचर, इमारती लकडी औषधि उद्योग आदि के कारण वन नष्ट हो रहे है ।

5) **पशुचारण :** भारते मे पशुओं की संख्या अधिक है । विश्व की पशु संख्या का 19 प्रतिशत भाग यहीं पर है । देश में चारागाहों की संख्या कम बहुत है । ज्यो-ज्यो वन क्षेत्रों का -हास हो रहा है । चारागाह क्षेत्र विलुप्त हो रहे है । साथ ही साथ जो वन बचे है उनमे अनियमित पशुचारण से वन विनाश अधिक हो रहा है।

6) **रेल तथा सड़क मार्गो का निर्माण : -** अँगलशासन काल में देश में रेल तथा सडक मार्गो का तेजी से जाल बिछाया गया । इनके मार्ग में पडने वाली वनस्पतीयों को काट दिया, ट्रक बनाने, रेल में उपयुक्त स्लीपर बिछाने के लिए साल जैसे महत्वपूर्ण वृक्षों को बडे पैमानि पर काटा गया ।

पर्वतीय क्षेत्रों मे पहाडी ढालों के सहारे चट्टानो को काटकर सडकों का निर्माण किया गया । अनेक महत्वपूर्ण वनस्पतियॉ नष्ट हो गयी । इसका प्रभाव पर्यावरण पर पड रहा है ।

7) **झूमिंग कृषि :-** वनों को काटकर झूमिंग कृषि की जाती है । धासें तथा अनेक छोटी-छोटी वनस्पतीयों को जला दिया जाता है । पूर्वोत्तर भारत के बडे भू-भाग पर इस प्रकार की कृषि की जाती है । यहॉ आदिवासियों द्वारा झूलिंग कृषि की जाती है । अरूणाचल प्रदेश , असाम , मणिपूर, नागालैंड मेघालय, मिजोरम एवं त्रिपुरा में लगभग 150 आदिवासी काबीले है जिनके द्वारा झूमिंग कृषि से 95 लाख हेक्टयर वनों का विनाश किया गया है ।

प्रारम्भ में भूतल में 40% भूभाग पर वन थे । किन्तु कृषि के विस्तार एवं मानव बसाव के कारण लगभग 28 % भागर पर वन रह गए है । औद्योगिक क्षेत्रों में लगभग 40 % वन क्षेत्रों का उपयोग किया जा हरा है । जबकि 60 % क्षेत्र अगम्य क्षेत्रों मे अथवा अनुपयुक्त लकडियों के कारण उपयोग में नही आ रहा है । भूतल से पिछले एक सौ वर्षो में वनों का अधिकांश देशों में निर्दयतापूर्वक, काटा जा रहा है , इस प्रकार वनों का विनाश विभिन्न कारणो से होता है ।

वनों के विनाश के दुष्परिणाम : -

1) वन नभी को संचित रखते है , किन्तु जहॉ वनों का विनाश हो जाता है , वहा नमि के अभाव, शुष्कता तथा तापमान की अधिकतः के कारण मरूस्थलीय भूमिका विकास होने लगता है ।
2) भूमिकटाव - वनों की जडें भूपटलपर विद्यमान मिट्टी को जकडे रहती है जिससे धरातल पर स्थिरता बनी रहती है । जब वन समाप्त हो जाते है, तो जडों द्वारा मृदा की पकड समाप्त हो जाती है । परिणामतः वायु एवं जलीय उपरदन अधिक होने लगता है ।
3) बाढों का प्रकोप : वन वर्षा जल को अपने में सोख लेते है , किन्तू जब पृथ्वी वन विहीन हो जाती है तो वर्षा का जल तीव्र गति से प्रवाहित होने लगता है, जिसके कारण मिट्टी का कटाव भी अपेक्षाकृत अधिक होता है ,
4) **मिट्टी में पोषक तत्वों का अभाव : -** वनो वाले क्षेत्रों में पतियाँ गिरकर सडती रहती है । जिससे मिट्टी को पोषक तत्व मिलते रहते है, किन्तु जब वनों का विनाश हो जाता है । तब पत्तियों के अभाव में मृदा पोषक तत्वों का अभाव होने लगता है ।
5) **वर्षा की कमीः -** वन वर्षा तथा भूमिगत जल स्तर के लिए उत्तर दायी है, ये वर्षा कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, क्योंकि जलीय हवाओं को रोखकर वे वर्षा कराते है, वनों के अभाव में वर्षा मे कमी आती है तथा सूखा पड जाता है ।

6) **चारागाह स्थलों का विनाश : -** वन विनाश से वर्षा में कमी होती है परिणाम स्वरूप घास की कमी होने लगती है , क्योंकि इसके उगने के लिए आवश्यक जल मिल पाता है, ऐसी स्थिती में पहले का चारा सुखने लगता है तथा नवीन उग नही पाता है अंत पशूंओ के लिए पर्याप्त मात्रा मे चारा मिल नही पाता है । अंत मे व मरने लगते है ।

7) **जलवायु सम्बन्धी परिवर्तन : -** वन वायुमण्डल की नमी को सोखते रहते है तथा नमीं को कम करते है, किन्तु इनके अभाव में वायुमण्डल अपेक्षाकृत गर्म हो जाता है तथा दैनिक एवं वार्षिक तापान्तर में विषमता बढने लगती है , इस समय तापमान में कुछ बढो-तरी हो गयी है ।

8) **भूमिगत जल स्तर को नीचे जाना :-** वन वर्षा के जल को सोख लेते है तथा उसे भूमि के अन्दर ले जाते है जिसके भूमिगत जल स्तर उँचा बना रहता है, किन्तु इन वनों के अभाव में वर्षा का जल नदी नालो के माध्यम से बह जाता है जिससे भूमि में प्रेवश नही कर पाता है परिणामता : जलस्तर नीचे चला जाता है जल स्तर के नीचे जाने के कुप्रभाव मानव जाति में सक्षम है ।

9) वृक्षों के द्वारा कार्बन आईऑक्साइड अवशोषित की जाती है । तथा ऑक्सिजन प्रधन की जाती है,जो सभी जीवधारियों के लिए अत्यावश्यक है किन्तु वनाों के अभाव में Co_2 की मात्रा में वृध्दि होती है । इससे पर्यावरण का - हास होना प्रारम्भ हो गया है ।

10) वनों के विनाश से वर्षा का जल नदियों मे जाता है एवं रास्ते में कटाव द्वारा मृदा को नदियों में पहुँचाता है, अतः उससें सिल्ट जमा होती रहती है जिससे बाढें आती है । परिणामतः जलाशयों की आयु कम हो जाती है ।

11)वनों के विनाश से मानव को मिलने वाली इमारती लकड़ियों की कमी होणे लगती है ।

12) वनों के विनाश से उन पर आधारित उद्योग प्रभावित होते है । इससे मिलने वाले विभिन्न वनोपज भी नही मिल पाते है ।

पर्यावरण विशेषज्ञ एस.एन.घोष के अनुसार " जंगलों का प्रमुख उत्पादन तो पानी ही है, लकडी तो उनका द्वितीयक उत्पादन है, इनके कटने से भूक्षरण, बाढ एवं ऑधियों तेज हो जाती है शीत ऋतु में तापमान बहुत गिर जाता है तथा ग्रीष्म ऋतू में बहुत बढ़ जाता है । दिन-रात के तापान्तर में वृध्दी हो जाती है , अनावृष्टि , सुखे की आशंकाए बढती जाती है, वृक्ष समस्त परिस्थितियों में असन्तुलन बिठाकर पारिस्थितिक तंत्र को सुचारू रूप सें संचलित करते है, कालान्तर में वनोंके -हास का दुष्प्रभाव ग्लोबल वार्मिग, समुद्रीजल सतह के बढने से तथा अन्य भयावह पर्यावरणीय समस्याओं का जनक हो सकता है "

संदर्भिका (Reference)

1) UGC/ NET/ SET भूगोल . डॉ.एम.एस.सिसोदिया - उपकार प्रकाशन आगरा 2
2) पर्यावरण भूगोल - डॉ.गायत्री प्रसाद - शारदा पुस्तकभवन, इलाहाबाद
3) पर्यावरण भूविज्ञान - अहिरराव, अतिझाड, वराट, निराळी प्रकाशन, पुणे
4) पर्यावरण भूगोल - डॉ. वराट प्रा.बोरूडे विधा बुक्स पब्लिशार्स, औरंगाबाद
5) UGC/ NET/ SET भूगोल डॉ. जाट, गितांजली प्रकाशन, जयपूर
6) UGC/ NET/ SET भूगोल गुप्ता पॉप्युलर प्रकाशन, दिल्ली
7) पर्यावरण भूगोल - अलका गौतम - रस्तोगी पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ
   पर्यावरण भूगोल - एरक भडोचा - UGC, दिल्ली